Totalbhakti.com

lrk"kh ekrk dh vkjrh

जय संतोशी माता मैया जय संतोशी माता।
अपने सेवक जन की, सुख सम्पत्ति दाता।।
सुन्दर चीर सुनहरी, मां धारण कीन्हों।
हीरा पन्ना दमके, तन श्रृंगार लीन्हों।।
गेरु लाल छटा छवि, बदन कमल सोहे।
मन्द हसत करुणामयी, त्रिभुवन मन मोहे।।
स्वर्ण सिंहासन बैठी, चवर ढुरें प्यारे।
धूप दीप मधुमेवा, भोग धरें न्यारे।।
गुड़ अरु चना परमप्रिय, तामे संतोश कियो।
संतोशी कहलाई, भक्तन वैभव दियो।।
शुक्रवार प्रिय मानत, आज दिवस सोही।
भक्त मण्डली छाई, कथा सुनत मोही।।
मन्दिर जगमग सोही, मंगल ध्वनि छाई।
विनय करें हम सेवक, चरनन सिर नाई।।
भक्ति भावमय पूजा, अंगीकृत कीजै।
जो मन बसै हमारे, इच्छित फल दिजै।।
दुखी दरिद्री रोगी, संकट मुक्त किये।
बहु धन धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिये।।
ध्यान धरे जन तेरा, वांछित फल पायो।
पूजा कथा श्रवण कर, उर आन्नद आयो।।
शरण गहे की लज्जा, रखियो जगदम्बे।
संकट तू ही निवारे, दयामयी अम्बे।।
संतोशी मां की आरती, जो कोई जन गावे।